अब हम फिर कभीं न मिलेंगे

पता नही दूसरे लोगों का पहला प्यार उनकी किस उम्र से जुड़ा है!
मै बस अपने बारे मे जानता हूँ। मेरा पहला प्यार मेरी ग्यारह वर्ष की उम्र से जुड़ा है। उसे मै पहली क्लास से जानता हूँ। उसके पिता जगजीवन नगर धनबाद के वेलफेयर ऑफिस मे किसी ऊँचे पद पर कार्यरत थे। परिवार मे पॉच बेटियॉ थी, जिनमे वो सबसे छोटी थी। पढने लिखने मे तो वो तेज थी ही, खेलने कूदने से लेकर दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे भी वो दूसरों से दो कदम आगे रहती थी। वो कद मे भी हम सबसे बड़ी थी। शुरू के दिनो मे तो मै उसके साथ उठ बैठ लेता था, हँस बतिया लेता था, पर जब मै ग्यारह वर्ष का हुआ तो मेरे मन मे एक चोर समा गया। मै उसे बस कनखियों से देखने लगा। जब तब मेरी चोरी पकड़ी भी जाती थी। उसके गाल शर्म से लाल हो उठते थे।
सातवीं क्लास के बाद कोएजूकेशन न रहा। मै तो इसी स्कूल मे रह गया, पर उसे राजकीय बालिका विद्यालय हीरापुर मे दाखिला लेना पड़ा। स्कूल से वापसी का रास्ता हमारे स्कूल के सामने से ही था। उसके क्लासों के खत्म होने का समय हमसे अलग था। मै लोगों की नज़र बचा कर उसके वापसी का इन्तजार करता था। वो मुझे दूर से ही दिख जाती थी। अपनी तीन चार सहेलियों के साथ वो नजरें झुकाए आती दिखती थी, पर मेरे स्कूल के सामने एक बार उसकी नजर मेरी ओर उठ ही जाती थी।
सातवीं क्लास के बाद हमारे स्कूल मे यूनिफार्म का प्रावधान न था, पर उसे यूनिफार्म के नाम पर नीली स्कर्ट और सफेद ब्लाउज पहननी पड़ती थी। शनिवार और रविवार को अपनी सायकल से न जाने कितनी बार मै वेलफेयर ऑफिस के कॉलनी के चक्कर मार आया करता था। मुझे ये भी पता न था कि वो इस कॉलनी के किस बंगलें मे रहती है!कभीं कभार वो अपनी किसी बड़ी बहन की सुरक्षा मे वहॉ के पार्क मे झूला झूलने आती थी, पर मेरी हिम्मत इस पार्क मे जाने की न होती थी। बस अपनी सायकल से इस पार्क के चक्कर मारा करता था। पता नही मुझे अपने प्यार के उजागर होने से इतना डर क्यों लगता था!मेरा प्यार बस मेरे और उसके बीच ही सीमित था।
मैने आज तक उसके नाम से एक भी पत्र न लिखा। उन दिनो भी न लिखा। मुझे इन पत्रों के पकड़े जाने का डर होता था। एक और डर मुझमे समाया हुआ था, उसकी बदनामी का। चारो ओर हमारी खिल्लयॉ ही तो उड़नी थी। पता नही उसकी मॉ कैसी थीं, पर मै अपनी मॉ को जानता था। उन्होने तो मेरी काने ही उखाड़ कर रख देनी थी।
मेरा दिल कहता था कि उसे मेरे प्यार का पता है और इसे वो स्वीकारती भी है। मै यही सोच कर विहवल हो जाता था। मै कल्पनाओं मे खो कर उससे बातें करने लगता था। उसे अपना सुख दुख सुना कर उसे रोने और मुस्कराने पर बाध्य करता था, फिर उसके रोने पर उदास और मुस्कराने पर मुस्कराने लगता था। एक तरह से मै ही उसे उठना बैठना, बातें करना, शर्माना और पता नही क्या क्या सिखाये जा रहा था। एक निदेशक की तरह मै उससे तमाम रोल्स करवाये जा रहा था, पर उसे भी मै निदेशक की कुर्सी देकर उसके अनुसार अपने रोल्स किया करता था। कल्पनाओं मे मै उसके जन्मदिनो पर गया, उसे अपने पास बुलाया, हम इकट्ठे सिनेमाघरों की लाईनों मे खड़े हुए, पार्को मे गए, लम्बी लम्बी यात्राओं पर गए, काम से वापस घर आकर उससे बरामदे मे अपना इन्तजार करवाया, उसके साथ होली खेली, दीवाली मे उसके साथ दीप जलाये।
हायर सेकेन्ड्री के बाद मुझे धनबाद छोड़ना पड़ा और उसे बी ए पार्ट वन मे। मुझे पता चला कि उसके पिता का ट्रान्सफर हो गया है। सलवार कुर्ते मे बस उसे एक ही बार देख पाया। मै धनबाद के राजेन्द्र मार्केट के मद्रास कैफे की सीढियॉ उतर रहा था और वो चढ रही थी। पूरा परिवार साथ था। मद्रास कैफे मे घूसने के पहले तक वो अपनी नजर मुझसे न फेरी।
आज के दिन मे वो कहॉ है और क्या कर रही है!मुझे पता नही है। उससे मेरी दुवारा मुलाकात एक तरह से असम्भव है। इस अनहोनी को होनी मे बदलना मेरे नही, बस ईश्वर के हॉथों मे है।
कल्पनाओं मे मै आज तक उससे मिलता और उससे बातें करता हूँ। मै वैसे ही चलता, फिरता हूँ जो उसने मुझे अपने निदेशन मे सिखाया था। मेरे लम्बे लम्बे डग लेकर चलना उसे बड़ा अच्छा लगता था, आज तक मै वैसे ही चलता हूँ। उसे मेरे काढे मॉग अच्छे न लगते थे। मैने मॉग काढना ही बन्द कर दिया। उससे की गई बातें बाद के दिनो मे मेरी भाषा बन गई। जो आचार विचार और व्यवहार मेरा उसके संग था, उन्ही मे मेरा व्यक्तित्व ढलता चला गया।
कल्पनाओं का ये संसार तो मेरे जी का बवाल ही बन गया। वो कहीं एडमिनिस्ट्रेटीव ऑफिसर बन कर दो चार चपरासी अपने घर पर खटवा रही होगी और मै आज तक अपने द्वारा उसे दिया पूरा व्यक्तित्व अखंडित किसी दूसरे मे ढूँढ रहा था। धनबाद, बनारस, इलाहाबाद, दिल्ली, मास्को से होता हुआ मै बर्लिन आ गया। जब तब यहॉ वहॉ मुझे उसका अल्पांश भी दिखा। मै वहॉ ठहरा भी, पर मुझे इन अल्पांशों के साथ नही जीना था। मुझसे कई दिल टूटे, पर बिना किसी बात की परवाह किए मै आगे बढता गया। कई बार मुझे अपने जीवन मे उसके अल्पांश से कुछ ज्यादे ही टकराया और मै एक समझौते के लिए तैयार भी था, तभी मेरे मन के अन्दर एक जज अपनी दन्डसंहिता लिए आ बैठा। पता नही उसे एक बॅटें मन और एक बॅटे तन से इतनी नफरत क्यों थी!गुनहगारों को वो कड़ी से कड़ी सजा देता था। उनकी दूसरी उपलब्धियों की ओर वो देखता तक न था।
मै अपनी इन दोनो बेड़ियों को जान चुका था, पर इन्हे काटने की हिम्मत मुझमे न थी। मै इनके मोर्चा खा कर कमजोर होने का एक तरह से इन्तजार कर रहा था। मेरे छोटे बड़े भाई और दूसरे तमाम दोस्त शादी व्याह करके गार्हस्थ्य जीवन के थपेड़े खाए जा रहे थे और मै सत्ताईस वर्ष का होते हुए भी पूरी स्वतंत्रता के बाद एक पत्नी तक न ढूँढ पा रहा था। लोगों के शक सुवहा के छींटे मेरे परिवार पर पड़ रहे थे। दो चार पत्रों मे मुझे भाभियों से जनखा सुनने को भी मिला।
मेरा जीवन बेहद ही एकाकी हो चला था। दोस्त के नाम पर बस दो चार कलिग्स ही बचे थे। बस उन्ही से काम पर दो चार बातें हो जाती थी। इतने वर्ष विदेश मे रहने के बाद मै न सिर्फ अपने व्यवहारों मे, बल्कि विचारों मे भी कम से कम भारतीय न रह गया था, परन्तु अभारतीय भी नही। अपने देश मे मै अपने को परदेशी ही पाता था और जर्मनी मे अपने को देशी नही। मेरी हालत धोबी के कुत्ते से बेहतर न थी, जो न घर का होता है और न घाट का।
एक शाम काम के बाद मै काईसर्स जेनरल स्टोर मे घूसा ही था कि मेरी नज़र एक लड़की पर पड़ी। उसके खरीददारियों वाली गाड़ी के पिछले हिस्से मे बच्चों के बैठने वाली सीट पर यही कोई एक दो वर्ष का बड़ा प्यारा बच्चा बैठा था। हर सामान को देखते ही वो अपने दोनो हॉथ उठा कर मचलने लगता था। एक लेन की दूरी रख कर मै इस मॉ और बच्चे की एक एक गतिविधि देखे जा रहा था। अब तक इस मॉ की नजर मुझ

पर न पड़ी थी।कभीं मुझे उसका चेहरा दॉई तरफ से तो कभीं वॉई तरफ से दिखता था।उसने एक काले फ्रेम का पावर वाला चश्मा भी पहन रखा था।रह रह कर वो कोई सामान अपने हॉथ मे लेती थी फिर पैकिन्गों पर लिखे टेक्स्ट पढ कर उसे वैसे ही ताखे पर सजा देती थी।मै विना देखे अपने जरूरत के सामान अपनी गाड़ी मे डालता जा रहा था पर उसकी गाड़ी अभीं भी खाली थी।मै उसकी गाड़ी मे बस एक गॉठ गोभी देख रहा था।मुझे लगा कि या तो उसे किसी खास प्रिजर्वेटिव से परेशानी है या फिर उसे चीजों के दाम मँहगे लग रहे है।बड़ा चिन्तन मनन के वाद उसने किलो आलू का एक थैला और एक सवसे सस्ती टोस्टव्रेड अपनी गाड़ी मे डाला।मुझे जो सामान लेने थे वो मै अपनी गाड़ी मे डाल चुका था।अपने लेन बदल बदल कर बस मै इस लड़की को सामने से देखना चाहता था।उसके पहनावे और बाल हूबहू कारीन जैसे थे।उसका कद भी कारीन जैसा था।

तभी चाक्लेटों वाला लेन आया।अब उसका बच्चा उसके बश का न था।वो जिस ताखे की तरफ अपना हॉथ बढाता था वो उसका हॉथ थाम लेती थी या फिर उसके कानों मे कुछ फुसफुसाने लगती थी।अब इस बच्चे के पास कोई धैर्य न रहा।ऊँची आवाज मे रोने लग पड़ा।किसी तरह उसे समझा बूझा कर उसने उसे शान्त किया और एक स्टैंड से उसे एक लालीपॉप लेकर पकड़ा दिया।पहली वार एक आड़ से मैने उस मॉ का पूरा चेहरा देखा।वो कारीन ही थी।एक साथ कई सवाल मेरे दिमाग मे गूँजे॰ये लड़की लिख्टरफेल्डे मे क्या कर रही है!इसका पति अंकारा से वापस आ गया क्या!इसने अपनी पढाई खत्म की या नही!

काईसर्स मै मुझे उसे टोकना ठीक न लगा।मै सीधे काऊन्टर नम्बर सात की लाईन मे जा लगा।कारीन अभीं भी घूम घूम कर सामानो की पैकिन्गस पर लिखे टेक्स्ट पढे जा रही थी।

इस लाईन मे मुझे शायद पॉच मिनट खड़ा होना पड़ा।अपने सामानो की कीमतें चुका कर मै काईसर्स के वाहर आया।एक वर्च के पेंड़ से मेरी सायकल वॅधी थी।अपने झोले सायकल की डोलची मे डाल कर मैने चैन खोली और चलने को ही था कि मुझे न जाने क्यों कारीन पर बड़ी दया आई।जिस तरह से मैने आज से सात वर्ष पहले उसका अपार्टमैन्ट छोड़ा था वो मुझे नही करना था।उसकी कोई भी गलती न थी।

अपनी सायकल फिर से उसी पेंड़ से टिका कर मैने एक सिगरेट सुलगाई और उसके काईसर्स से बाहर आने का इन्तजार करने लग पड़ा।आधे घन्टे से ऊपर हो चले थे और कारीन अभीं भी काईसर्स मे थी।मै तीन सिगरेटें फूँक चुका था।तभी मेरी नज़र काईसर्स के वाहर सड़क के किनारे एक फटी चिटी बग्गी पर पड़ी।वो किसी जंजीर से भी न वँधी थी।ऐसी बग्गी को जर्मनी मे चुराता भी कौन!

हल्का सा अँधेरा छा चुका था पर काईसर्स मे जलती वत्तियों का प्रकाश उससे वाहर सड़क तक फैला हुआ था।मै अपनी चौथी सिगरेट सुलगाने ही वाला था कि कारीन काईसर्स से वाहर आती दिखी।अपने वॉये हॉथ से वो एक थैला पकड़े हुई थी और दाहिने हॉथ से अपने बच्चे को सम्हाली हुई थी।वो उसी फटी चिटी बग्गी की ओर बढी।उसके हैन्डल से पहले उसने अपना थैला लटकाया फिर अपने बच्चे को उसमे विठाया।एक वार मै ये बग्गी हिली तक नही।हिलती भी कैसे!उसके चारो पहिये चार दिशाओं मे थे।किसी तरह उसने उन्हे सामने की दिशा मे मोड़ कर चलना ही चाहा था कि मैने उसे उसका नाम लेकर पुकारा।अपने बच्चे को बग्गी मे विठाने से पहले भी उसने एक सरसरी नजर मुझ पर भी डाली थी पर वो मुझे पहचान न पाई थी।

॰या! कह कर वो मेरे उसके समीप आने का इन्तजार करने लगी।

उसके और मेरे वीच शायद दस कदम का भी फासला न था।

॰मैने तुम्हे विना चश्मों के पहचान लिया और तुम अपने चश्मों के बावजूद मुझे नही पहचान पा रही हो!

दो चार क्षण तो उसने लगाये पर वो मुझे भी पहचान ही ली॰ओ गोट!तुम प्रमोद हो न!इस इलाके मे क्या कर रहे हो!

॰तुम इस इलाके मे क्या कर रही हो!

॰मै तो यहॉ रहती हूँ।

॰कब से!

॰दो सप्ताह से।

॰किस सड़क पर तुम्हारा मकान है!

॰ठीक सामने दॉये वाली सड़क पर।

॰तुम ओवलिनस्ट्रासे पर रहती हो!

॰या या!और तुम!

॰मै भी यहीं रहता हूँ।उस सामने वाले व्रिज के वाद पहली वाली पर नही दूसरी वाली सड़क पर।

॰गेरानियनस्ट्रासे पर!

॰या।

॰मै तुम्हे घर तक छोड़ दूँ!अन्धेरा हो चला है।

॰जैसी तुम्हारी मर्जी।

॰ठीक!तुम अपना थैला मेरे सायकल के हैन्डल से लटका लो और मेरी सायकल सम्हालो।मै तुम्हारी बग्गी सम्हालता हूँ।

उसका बच्चा एकटक मुझे निहारे जा रहा था।मुझे अपना परिचय उसे भी देना था॰जब मैने अपना दाहिना हॉथ बढा कर अपना नाम वताया तव उसने अपना नाम कारो वता कर अपना चिपचिपा हॉथ मेरी हॉथ मे दे दिया।

॰कैरोलीन

मैने बग्गी सम्हाली और कारीन ने मेरी सायकल।

जहॉ मै कारीन से मिला था वहॉ से कारीन के घर की दूरी बस पॉच मिनट की रही होगी।मै उससे कुछ ज्यादे न पूछ पाया।कारो दो वर्ष की थी। चाहे अनचाहे मुझे उससे पूछना ही पड़ गया॰तुम अब अपने पति के साथ रहती हो!

॰नही।

॰फिर!

॰अकेली।अपने बेटी के साथ।

उसका घर आ गया था।उसका थैला उसे वापस देकर कारो को चूश कहके मैने अपनी सायकल मोड़ी ही थी कि पीठ पीछे कारो का ये कहना सुनना पड़ाःतुम हमारी बग्गी हमारे केलर तक नही ले जा सकते!मॉ के लिए वो भारी है।
ःहॉ हॉ क्यों नही!झटपट अपनी सायकल स्टैंड पर लगा कर उसे मैने गोद मे लिया और उसे कारीन को थमा कर उसकी बग्गी उठा ली।बग्गी केलर मे रख कर जब मै ऊपर आया,तो देखा कारीन फ्लोर पर मेरा इन्तजार कर रही है।पहली बार मैने उसे ध्यान से देखा।धारीदार कमीज ,जीन्स,घूँघराले बाल,लाल रीबन,चेहरे पर लटकते लट,काले फ्रेम का चश्मा।उन दिनो भी वो अपने कमीज की बॉह केहूनी तक लापरवाही से चढाई रहती थी,आज भी उसके कमीज की बॉह वैसे ही चढी थी।कमीज के कॉलर वैसे ही खड़े थे।ऊपर की एक बटन वैसे ही खुली थी।उसके डान्के श्योन को सुनते ही कारो भी मुझे डान्के श्योन कही।चलने से पहले मैने उससे कहाःहम पास पास ही रहते हैं।अक्सर मुलाकातें होती रहेंगी।
वो भी मुझसे कुछ कहना तो चाहती थी,पर कुछ कह नही पाई।
इस कारीन से मेरी मुलाकात एक हैर्टी नामके कन्सर्न मे हुई थी।वहॉ मुझे तीन सप्ताह का काम मिला हुआ था।बर्लिन मे मुझे आये सात महीने हो चले थे।मै काम चलाऊ जर्मन बोल लेता था।ये हैर्टी मेरे हॉस्टल से ज्यादे दूर न थी।मेरे हॉस्टल और हंसा प्लात्स मेट्रो स्टेशन के बीच मुश्किल से पॉच मिनट का फासला रहा होगा।दूसरा मेट्रो टुर्मस्ट्रासे था,जिसके बाहर निकलते ही हैर्टी थी।मुझे एक स्टैंड पर ओस्टर आयर बेचने थे।आधे घन्टे मुझे काम और कैश बॉक्स के बारे मे समझाया गया।जितना मैने इस काम को आसान समझ रखा था,उतना आसान ये काम न था।ठीक आठ बजे जब हैर्टी खुली,तो भींड़ का एक रेला अन्दर आया और मेरे स्टैंड के सामने देखते ही देखते सैकड़ो लोग कतार बनाके खड़े हो गए।मुझे बार बार भाग कर चीजों के दाम देखने पड़ते थे।पसीने से मै ऊपर से लेकर नीचे तक नहा चुका था।भींड़ छॅटने का नाम ही न ले रही थी।कैश बॉक्श का बिजली की तरह खुलना और बन्द होना रूकने का नाम ही न ले रहा था।मुझे साढे ग्यारह बजे आधे घन्टे की छुट्टी मिली।मै थक के चूर हो चला था।लिफ्ट लेकर मै पॉचवीं मंजिल पर आया।इस मंजिल पर हैर्टी की कैन्टिन थी।अपना खाना लेकर मै एक खाली मेज तक आया,पर मुझसे एकाध चम्मच से ज्यादे खाया न जा सका।जब तब मेरे कानो मे कस्टमरों की डॉट फटकारें एक प्रतिध्वनि के साथ गूँजने लगती थी।मैने कईयों से कहा भी कि मै नया हूँ।आधे घन्टे के अन्दर मै सारे आयरों के दाम अपने दिमाग मे कैसे बिठाता,फिर भी वो मुझे डूम कौफ ,बेवकूफ कह जाते थे।अजीब सा स्वभाव था,जर्मनो का।
अपने ब्रेक मे ही मै ये तय कर चुका था कि अब मै जर्मनो से उल्टे सीधे पैसे लूँगा।दो चार फेनिग्स से न तो ये गरीब होने से रहे और न हैर्टी का दिवाला निकलने से रहा।बहुत सुन लिया मैने इनका।
एक नये आत्मविश्वास के साथ मै नीचे आया।अब मैने इनसे मुस्करा मुस्करा कर मनमाना दाम लेना शुरू किया।डान्के श्योन की बरसात होती रही।साढे सात घन्टे के अन्दर मैने दस हजार मार्क के आयर बेच मारे।मेरा चीफ खुशी से फूले न समा रहा था।
दूसरे दिन हैर्टी खुलने से पहले मेरे चीफ ने एक लम्बी खूबसूरत सी लड़की से मेरा परिचय करवाते हुए कहाःआज से ये तुम्हारे साथ काम करेगी।इसे तुम जरा कैश बॉक्श का काम समझा देना।
अपना परिचय उसी ने दियाःकारीन एन्गेलहार्ड।
अपना परिचय दे कर मै उसे काम समझाने लगा।मैने उसे इतना भी कहा कि दवा के गलतियॉ करना,पर इस बात का ख्याल रखना कि कस्टमर उसे भॉपें नही।स्टोर्नो के चक्कर मे पड़ोगी तो बस पागल हो जाओगी।पर उसने मेरी बात ढंग से न सुनी।
दोपहर तक खाने के ब्रेक से पहले वो अपने कैश बॉक्श ब्लॉक कर के कस्टमरों की गालियॉ सुनती रही और मै मस्त उनसे उल्टी सीधी कीमते लेकर उनके डान्के श्योन सुनता रहा।
खाने की आधे घन्टे की छुट्टी हमे एक ही साथ मिली।जब मै अपना खाना ले कर कैन्टिन मे एक कोने की मेज पर बैठा तो मेरी नजर उस पर पड़ी।उसके सामने खाने का एक भरा ट्रे पड़ा था और वो एक रूमाल अपनी नाक पर रखे रोये जा रही थी।
मुझसे न रहा गया।मै अपने खाने का ट्रे लिए उसके पास जा पहुँचाःतुम खाना क्यों नही खा रही हो!बस रोये जा रही हो।आज ऐसे भी तुम्हारा पहला दिन है।तुम्हे पता नही है,कल मुझे क्या क्या सुनना पड़ा था।मैने सब कुछ एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया।ऐसी बातों को तुम इतना सिरियसली क्यो लेती हो!
मै ट्रे लिए अब भी उसके टेबल के सामने खड़ा था।
हिचकियों के बीच बस वो इतना ही कह पाईःतुम एक बार अपना नाम दुहरा सकते हो!मै तुम्हारा नाम ठीक से न सुन पाई।
ःतुम मुझे मेरे फर्स्टनेम से बुलाना चाहती हो या फैमिली नेम से!
ःतुम्हारे फर्स्टनेम से
ःमेरा नाम प्रमोद है।
ःप्रमोद मै अभीं आई।तुम बैठो तो सही।खड़े क्यों हो!
फिर वो बाथरूम मे चली गई।मै उसका इन्तजार कर रहा था।
फ्रेश होने के बाद वो मेज तक आई और अपने खाने से भरा प्लेट उठा कर जूठे बर्त्तनो के कन्वेयर पर रख आई।जब वो वापस आई तो उसकी हॉथों मे कॉफी के दो कप्स थे।एक प्याला मेरी ओर बढा कर उसने मुझसे पूछाःतुम बर्लिन मे कब से हो!
ःसात महीनों से
इसके बाद उसने मुझसे कुछ न पूछा।मै देख रहा था कि वो अपनी डॉट फटकार से अब तक उबर न पाई थी।मै आराम से खाये जा रहा था।
मैने ही उससे पूछाःकारीनः तुम तो मुझे बर्लिन की नही लगती।तुम कहॉ से हो!
ःब्राऊनस्वाईग से
ःकहॉ है ये तुम्हारा ब्राऊनस्वाईग!
ःहानोवर का नाम तुमने सुना है!
ःहॉ
ःउसी के पास

ःबर्लिन मे तुम कब से हो!
ःचार साल से!
ःऔर क्या कर रही हो बर्लिन मे!
ःटेक्निकल यूनिवर्सिटी से एलेक्ट्रोटेक्निक कर रही हूँ।
तीन चार दिनो के बाद कारीन को हैर्टी मे मिलने वाली डॉट फटकारें बन्द हो गई।उसने राहत की सॉस ली।हममे से जिसके पास भी समय होता था एक दूसरे की मदद कर देते थे।एक तरह से ये स्टैंड हमारी अपनी दुकान हो चली थी।छुट्टी के बाद हम साथ ही हैर्टी से बाहर निकलते थे।मुझे वो मेट्रो स्टेशन की सीढियों तक पहुँचा कर पैदल ही घर चल पड़ती थी।शायद वो हैर्टी के कहीं आसपास ही रहती थी पर मैने कभीं उससे उसके न घर का पता पूछा न उससे उसका टेलीफोन नम्बर ही मॉगा।
एक हद तक कारीन मुझे भाने लगी थी और मै शायद उसे वरना उसने मुझे एक शाम डिस्को मे आमंत्रित न किया होता और न मै उसके साथ वहॉ गया होता।
पहनने को तो वो जीन्स ही पहनती थी पर उसकी कमीजें हमेशा धारीदार होती थीं।उनके आस्तीन वो लापरवाही से चढाये रहती थी।वो अपने घुँघरैले बाल भी बड़ी लापरवाही से एक लाल रीबन से बॉधे रहती थी।जब वो झुकती थी तब न जाने कितनी लटें उसके चेहरे पर झूलने लगती थी जो जब तब उसे परेशान भी करती थीं।
काम के अन्तिम दिन मुझे भी चाक्लेटों से भरा एक थैला मिला और साथ साथ चौदह सौ मार्क भी।मै इन पैसों से बर्लिन मे बिना कोई काम किए कम से कम आराम से तीन महीने गुजार सकता था।कारीन से विदा होने से पहले मैने अपना थैला उसकी हॉथों मे पकड़ाते हुए कहाःइसे रख लो।मै चाक्लेट वगैरह उतने मन से नही खाता।बर्लिन मे तुम भी हो और मै भी।कहीं न कहीं हम टकरायेंगे ही।
मै करीब करीब चलने को ही था कि उसने पूछाःतुम आज शाम को क्या कर रहे हो!
ःकुछ खास नही
ःमेरे साथ एक डिस्को मे चलोगे!बर्लिन मे डिस्को विस्को जाते हो!
ःदो चार बार अपने हॉस्टल के सामने वाले स्टूडेन्टेन डिस्को मे जा चुका हूँ पर एक बात मै तुम्हे बता ही देता हूँ न तो मुझे वहॉ के गाने अच्छे लगे न वहॉ के डान्सेस।सिगरेटो के धुँओं से ऑख तक जलते हैं।
ःमै जानती हूँ तुम्हारे डिस्को को।बीयर गार्डेन नाम के डिस्को मे कभीं नही गए!
ःएक बार एक दोस्त के साथ गया था।हमें घूसनें ही नही दिया गया क्योंकि हमारे साथ कोई फिमेल पार्टनर न था।
ःतुम चलोगे आज वहॉ मेरे संग!वहॉ के गाने तुम्हे अच्छे लगेंगे।
ःकितने बजे!
ःआठ बजे के बाद कभीं भी।
ःठीक है तुम मुझे उसका पता दे दो और समय बता दो।मै समय से आ जाऊँगा।बस मुझे नाचने वाचने को न कहना।
ःओके! तो तुम सवा आठ बजे अपने हॉस्टल के सामने मेरा इन्तजार करना।मै तुम्हे पिकअॅप कर लूँगीं।
ठीक सवा आठ बजे मै अपने हॉस्टल के सामने जा कर खड़ा हो गया।कारीन तो मुझे कहीं न दिखी पर दॉई ओर वाली सड़क पर एक लाल रंग की गाड़ी मुझे जरूर दिखी जिसके अन्दर की बत्तियॉ जल रही थी।झटके से इस गाड़ी से एक लड़की बाहर निकली और मेरा नाम लेकर पुकारी।आवाज तो मेरी जानी पहचानी थी पर चेहरा नही।चश्मे मे मै कारीन को पहचान ही न पाया।उसके दूर की नज़र थोड़ी कमजोर थी।
डिस्को मे दो काक्टेल्स ही मेरे लिए जरूरत से ज्यादे थे पर तीसरी खत्म करके मैने चौथे का भी आर्डर कर दिया जिसकी पहली घूँट भरने के बाद बस मुझे इतना ही याद है कि मै लड़खड़ाते कदमों से भींड़ को चीरता कारीन के पास गया था और उससे लगभग चिल्लाते हुए कहा थाःमुझे घर पहुँचा दो।वो झटपट मुझे थामे डिस्को के बाहर थी।ढंढी हवा के थपेंड़ो से थोड़ा मै जरूर जगा।अपने बॉये कान पर उसकी गरम सॉसे या अपने चेहरे के सामने उसका धड़कता वक्ष तो मुझे आज तक याद है जब वो मुझे गाड़ी की अगली सीट पर बिठा कर सेफ्टी बेल्ट के लॉक्स ढूंढ रही थी।
जब दूसरे दिन मेरी ऑखें खुली तो मै एक आरामदेह सोफे पर लेटा हुआ था और मेरे बदन पर एक मुलायम सा कम्बल पड़ा हुआ था।सर के नीचे एक तकिया भी था।मै एक पल मे ही जान गया था कि मै अपने कमरे मे नही हूँ।कीचन मे एक आरामकुर्सी पर कारीन बैठी कुछ पढ रही थी।उसकी एक बॉह मुझे नजर आ रही थी।उसने सफेद और नीले धारियों की एक कमीज पहन रखी थी।उसे मेरे जगने का पता लग चुका था।झटपट वो एक ग्लास मे ओरेंज जूस भर कर ले आई और मुझे पकड़ाते हुए पूछाःकैसी तबीयत है!
ःठीक ही है।मुझे मेरे कमरे मे क्यों नही पहुँचा दिया!
ःक्योंकि तुम्हारी हालत सीढियॉ चढने लायक न थी और मुझसे तुम उठाए न जाते।
रह रह कर मुझे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था जिसे कारीन भॉप चुकी थी।उठ कर वो मेरा हॉथ सहलाने लगीःभूल जाओ सारी बातें।ये सब तो चलता रहता है।मै बाथरूम मे तुम्हारे लिए एक साफ तौलिया रख आई हूँ।जाकर फ्रेश हो लो।फिर साथ कुछ खाएँगे कहकर उसने अपने पैर का चप्पल मेरी तरफ बढा दिया।
कम्बल परे करके मै बाथरूम की ओर बढा।बाथरूम मे लगे आदमकद शीशे मे मै किसी एक शराबी से कम न दिख रहा था।सर पर चिपके बाल कीचड़ से भरी लाल लाल ऑखें मुचड़ी कमीज और ऊपर से भिनभिनाता दिमाग।मै जाकर शावर के नीचे खड़ा हो गया और ठंढे पानी का टेप खोलकर आधे घन्टे तक नहाता रहा।
कारीन को गहरे नीले रंग से कुछ खास ही लगाव था जो मै उसके बाथरूम मे देख आया था।बाथरूम की दीवारों मे लगे टाईल्स तो नीले रंग के थे ही उसके फर्श पर बिछी कालीन भी नीले रंग की थी।नीले तौलिये नीली कंघियॉ यहॉ तक कि शैम्पू की शीशी तक नीली थी।नहा धोकर जब मै कमरे मे आया तो देखा कारीन अपने कीचन मे खड़ी कुछ पका रही है।मुझे देखते ही वो लपकती मेरे पास आईःअब कैसी है तुम्हारी तबीयत!
ःपहले से थोड़ी बेहतर है।
ःतुम्हारे लिए एक कप कॉफी लाऊँ!

ःहॉ!कह कर मै फिर धम्म से सोफे पर जा बैठा।एक सरसरी निगाह मैने कारीन के अपार्टमेन्ट पर डाली।एक फोल्डिन्ग सोफे के अलावे उसके पास एक कपड़ों की आलमारी.एक खाने की मेज और एक पढने की मेज थी।उसका कीचन इस कमरे से लगा हुआ था।पार्टीशन के नाम पर कीचन और कमरे के बीच एक कम ऊँचाई की दीवार बनी हुई थी।इस दीवार से लगी उसके खाने की मेज लगी हुई थी।उसके पढने की मेज के सामने एक पीन बोर्ड था.जो तमाम फोटोस.पम्फ्लेटों.रसीदों और न जाने किन किन कागजों से से भरा पड़ा था।पढने की मेज पर भी न जाने कितनी फाईलें.कागजें और किताबें गॅजी पड़ी थी।इस मेज के बगल मे कमरे के कोने मे एक रैक थी.जिस पर एक छोटा सा टेलीविज़न रखा हुआ था।रैक के नीचले तल्ले मे एक म्यूजिक सिस्टम और न जाने कितने गानों के रिकार्डस और कैसेटस पड़े हुए थे।

खाना लग चुका था और मै उसके पीन बोर्ड पर टॅकी तसवीरें देखे जा रहा था।बार बार मेरी नजर एक लड़के की तसवीर पर जा पड़ती थी।घूंघरैले बाल.घनी भॅवे.गोला चेहरा.छोटा कद।मै उसी की तसवीर घूरे जा रहा था।तभी कारीन मेरे पास आईःखाना लग चुका है।आओ कुछ खा लो।

उसे अनसुनी करके मैने उससे पूछाःकारीन ये तसवीर किसकी है!

ःमेरे पति की।

मेरी ऊपर की सॉस ऊपर और नीचे की नीचेःतुम शादीसुदा हो!

ःहॉ

ःकब शादी की!

ःडेढ साल पहले

ःये लड़का जर्मन तो नही लगता!

ःवो जर्मन नही है।वो तुर्क है।

ःवो तुम्हारे संग ही रहता है!

ःनही।जब हमारी शादी हुई.तब वो अपना डिप्लोम खत्म कर चुका था।कुछ महीने साथ रह कर वो वापस अंकारा चला गया।मै अपने सिमेस्टर की छुट्टियॉ अंकारा मे ही गुजारती हूँ।

उसका हर जवाब मेरे लिए एक भारी भरकम हथौड़े की मार से कम न था।विना उससे कुछ कहे मै अपने जूते पहनने लगा।जूते पहन कर जब मैने अपना जैकेट अपने कन्धे पर डाला.तो वो अवाक रह गई।हॉथ बढा कर उसने मुझे रोकना भी चाहा.जिसे परे करके मै दरवाजे की ओर बढा।विना लिफ्ट का इन्तजार किये मै सीढियॉ लगभग लॉघता सड़क पर आ गया।मैने मेट्रो तक न ली।तेज कदमों से मै सिगमुन्डसहोफ चल पड़ा।

सप्ताहों.महीनो मैने उसे कोसा.फिर तुर्कियों को गालियॉ बकी.जर्मनों को भला बुरा कहा.फिर मै अपनी किस्मत पर आया.जिसमे शायद कोई अनछूई जर्मन लड़की लिखी ही न थी।जिससे मिलो.उसके पीछे उसका इतिहास होता है।क्या क्या अनदेखा करूँ मै इस देश मे!क्या क्या अनदेखा मै अपने आप मे करूँ!

अपने भाग्य को मै कोसने से हमेशा ही डरता था।कहीं वो मेरे कोसने के बाद और न विकराल हो जाये।उसके फैसलों के सामने सिवाय माथा टेकने के मेरे पास दूसरा चारा ही न था।खिन्नताओं से भरा मेरा जीवन था.जो मै जीये जा रहा था।जलन और ईर्ष्या मेरी रग रग मे बह रही थी।उससे मै विदा न ले पा रहा था।ये मुझे किसी के बारे मे ढंग से सोचने ही न देती थी।सब कुछ लीप पोतकर गिरा ढहाकर मै आगे बढ जाता था।

कारीन को मै भूला नही था।मुझे अक्सर उसकी कई बातें याद आती थीं।थोड़ा बहुत दुख मुझे इस बात का भी था कि जैसे मै उसका अपार्टमेन्ट छोड़ के चल दिया था.वो मुझे नही करना था।

बर्लिन की दूसरी तीसरी व्यस्तताओं मे मै व्यस्त हो गया।कारीन मुझे दुबारा न दिखी।

कारीन के सामने एक लक्ष्मण रेखा जो मैने अपनी डायरी के हिंसाब से सात वर्ष पहले खींच दी थी.उसने उसे कभीं न लॉघा।

घर वापस आ कर मै घन्टों और कई दिनो तक उसी मे खोया रहा।कारो की भी मुझे बड़ी याद आई।

मै कई दिनों तक कारीन की तुलना बाद के दिनो मे मिलने वाली मेनकाओं से करता रहा।किसी मे ये था तो किसी मे वो और मेरा ईश्वर भी अपने हठ से टस से मस होने का नाम न ले रहा था।वो बस मुझसे खन्डित सौन्दर्यो से ही मिलवाता जा रहा था।

मेरी उम्र बढती जा रही थी.पर मै दो लोभों से बरी न हो पा रहा था।मुझे एक अनछूई लड़की की तलाश थी.जिसमे मै इकट्ठे सब कुछ पा जाऊँ जो मुझे अलग अलग व्यक्तित्वो मे अब तक नजर आए थे।

मेरे पीछे मिले लोगों के दरवाजे मेरे लिए हमेशा के लिए बन्द होते जा रहे थे।

एक बार मैने यहॉ तक भी सोचा।कारीन का दरवाजा अभीं बन्द नही हुआ है।इसके पहले कि देर हो जाय.मुझे उसे एप्रोच कर लेना चाहिये।

अनगिनत बार मैने उसे उसका नाम लेकर कोसाःतुम्हे अपने को किसी अंकारावासी से अपने को दूषित न करवाना था।मै अपने सामने की सभी दीवारें गिराने को तैयार हूँ.बस एक यही दीवार मुझसे गिराई नही जा रही है।वाकई इस दीवार को गिराना मेरे वश का न था।मै चाह कर भी अपनी अपेक्षाओं पर सन्निपात की गाज नही गिरा पा रहा था।

सप्ताह मे एक बार कारीन कारो के साथ मुझे कहीं न कहीं टकरा ही जाती थी।ज्यादेतर काईसर्स मे या फिर पोस्ट मे।हिन्डेनबुर्गडाम पर एक कैफे वैलेन्सिया भी थी।वहॉ भी वो मुझे अक्सर कारो के साथ दिख जाती थी।हलो हाय कहने के बाद मै उनका हाल चाल पूछ लिया करता था।कारीन तो औपचारिक ही बनी रहती थी.पर कारो मुझसे खुलने लगी थी।मुझे पता नहीं!वो कहॉ कहॉ की बातें सुनाने लग पड़ती थी।घने घूॅघराले बाल.गोल मटोल चेहरा और ऊपर से हरी हरी ऑखें।मेरे थैले मे कोई न कोई फल या चाक्लेट हमेशा ही रहता था।कारीन से पूछ कर मै कुछ न कुछ उसके हॉथ मे पकड़ा देता था।कारो जर्मन बोलती भी थी बेहद शुद्ध और कई वाक्य तो उसने अपने मॉ से रट लिये थे।ऐसे भी उत्तरी जर्मनी के लोगों की भाषा बर्लिन के लोगों की अपेक्षा अधिक परिमार्जित और मीठी होती है।जब मुझे कारो से वक्त मिलता था.तब कारीन से दो चार बातें हो जाती थी.जिनके आम विषय मौसम या मेरा काम या फिर बर्लिन ही होता था।

कारो के लिए मेरा नाम प्रमोद जरा कठिन था।वो मुझे रमोन कहती थी।अक्सर कारीन उससे मेरा सही नाम दुहराने को कहती थी.पर कारो उन

पर अपने कान तक न धरती थी। रमोन उसकी जुबान पर चढ चुका था।
ऐसी ही किसी एक मुलाकात मे एक बार उसने अपनी माँ से पूछाःमामा!ये रमोन मेरा क्या लगता है!
ःये तुम मुझसे क्यों पूछ रही हो!!अपने रमोन से ही पूछो।
ःतपाक से उसने मुझसे पूछाःरमोन तुम मेरे क्या लगते हो!विस्ट डू एटवा माईन फाटर!क्या तुम मेरे पिता हो!
ःनाईन.नही
ःडन!फिर!
ःइस वीन डाईन फ्रयाईन्ड उन्ड स्वार आईन सेयर गुटर।मै तुम्हारा एक अच्छा दोस्त हूँ।
मै जब कभीं श्लोसस्ट्रासे घूमने जाता था और वहॉ छोटे वच्चों लायक कुछ दिखता था.तो खरीद लेता था या खरीदने पर विवश हो जाता था।इसकी सिर्फ एक वजह थी।कारो को अच्छी तरह पता था कि मै उसका कुछ भी नही लगता फिर भी वो मुझमे अपने पिता को ढूँढ रही थी।मुझे देखते ही उसकी ऑखें चमकने लगती थीं।सब कुछ छोड़ कर भागे आती थी और आर्म आर्म की जिद़ पकड़ कर मेरी गोद मे चढ बैठती थी।
एक वार मै अपने काम से वापस घर आ रहा था।वेके पार्क की चढान लेकर ज्योंही मै हाईडेन स्ट्रासे पर आया कि अचानक मुझे एक स्पील प्लात्स मे कारीन अकेली एक बैन्च पर बैठी दिखी।उसकी नजरें एक झूले पर टिकी थी.जिस पर कारो बिना किसी भय के पेंगे मारे जा रही थी।अपनी सायकल मोड़ कर मै स्पील प्लात्स पर आया और कारीन के बैंच की बगल मे अपना सायकल स्टैंड कियाः
हेलो कारीन
ःहेलो प्रमोद
ःकैसी हो!मै तुम्हारे संग थोड़ी देर के लिए बैठ सकता हूँ!
ःहॉ क्यों नही !
मै अभीं ढंग से बैठा भी न था कि कारो की मुझ पर नजर पड़ी।झटपट झूले से उतर कर वो मेरे पास भागी आई।लाडे लाडे कहके वो मेरी वॉहों मे झूल गई ।उस दिन वाकई मेरे झोले मे एक भी चाक्लेट न था।एक सेव मेरे पास था.जिसे वो मेरे मुँह पर फेंक कर फिर झूले की तरफ वढ चली।झटपट कारीन उसे डपटने को उठी.पर इशारे से मैने उसे मना कर दिया।कारो अपना मुँह फूलाये झूला झूल रही थी और हमदोनो उसे देखे जा रहे थे।जब तव कारीन मुझे वस कनखियों से देख लिया करती थी।
इन पिछले सात वर्षो मे जिस तरह मेरे जीवन मे उत्थान पतन आया था.वो कारीन के जीवन मे भी आया होगा।मै इस विषय को छेड़ना नही चाहता था।
ःएक चाक्लेट की वजह से कारो तुमसे नाराज है.पर घर पर सिर्फ तुम्हारे वारे मे ही पूछती रहती है।तुम्हारे दिये खिलौनो को मुझे भी नही छूने देती है।
ःकारीन!तुमने अपनी पढाई खत्म कर ली!
ःनही।
ःपर क्यों !
ःतुम्हे क्या वताऊँ!मेरे कई वर्ष यूँ ही जाया हो गये।
ःये ओवलिनस्ट्रासे पर तुम्हारे पास कितने कमरों का मकान है!
ःदो कमरों का।
ःकिराया कितना है!
ःतकरीवन चार सौ मार्क।
ःउसे फाईनेन्स कैसे करती हो!
ःवाफेक से.किन्डरगेल्ड से।थोड़े वहुत पैसे मॉ से मिल जाते है।
ःतुम इस पार्क मे रोज आती हो!
ःहॉ
ःकारो के लिए मैने एक मोवीले खुद ही बनाया है।कल काम के वाद उसे कारो को दूँगा।उसके वेड के ऊपर छत पर एक हूक फिट करके उसे लटका देना।हल्की हवा से अगर एक बार भी वो हिल गया तो घंटों हिलता रहेगा।अव मै चलूँगा।कारो को चूश कह देता हूं.कहके मै कारो के झूले की ओर बढा।मुझे देखते ही कारो ने अपनी नजरें फेर ली।अगर वो मेरी वेटी होती.तो मै उसे कव का झूले से उतार कर गोद मे ले लिया होता।मै कई वार उससे ऑख मिलाना चाहा.पर वो अपनी नजरें फेर लेती थी।कई वार मैने उससे चूश भी कहा.जिसका एक बार भी मुझे कोई प्रत्यूत्तर न मिला।हार कर मुझे उससे कहना पड़ाःतुम्हारे लिए मैने एक वहुत ही सुन्दर मोवीले वनाया है।उसे मै कल तुम्हारे लिए लाऊँगा।कल मै तुम्हारे लिए चाक्लेटस भी ले आऊँगा।सिर्फ एक वार तुम अपने रमोन को चूश कह दो।
वो झटपट अपने झूले से उतरी और मेरे गोद मे आ गई।अपनी दाहिनी हँथेली से वो हल्के हल्के मेरा कंधा सहलाये जा रही थी।
ःइस जीवन मे कौन किसके लिए रोता है!हमे अपनी ही कोई वात रूलाती है और हमे सवसे ज्यादे रूलाती हैं.हमारी अपेक्षायें और निराशायें।
काश!मेरे पास भी एक कारो जैसी बेटी होती!
एक तरह से मैने हिन्डेनवुर्गडाम का रास्ता ही छोड़ दिया और वेके पार्क के रास्ते ही काम पर आने जाने लगा।जून से सितम्वर तक कारीन और कारो मुझे रोज ही स्पील प्लात्स पर मिलते रहे।इन चार महीनो मे कारो को मैने तमाम खरीदे भेंट दिये।उसके लिए मै लकड़ी का एक पूपेन हाऊस.उसके खिलौनो के लिए एक चार पहिये की गाड़ी.गुड़ियों के सोने के लिए एक वेड उनके खाने पीने के लिए एक मेज और चार छोटी कुर्सियॉ और न जाने क्या क्या वनाया।मै इन्हे अक्सर इनके घर भी छोड़ने गया।कारीन तो इशारे से ही अपार्टमेन्ट मे आने को कहती थी.पर कारो तो जिद़ ही पकड़ कर बैठ जाती थी।मै कारीन के अपार्टमेन्ट मे कभीं न गया।
कारो चार घन्टे के लिए एक परिवार मे दूसरी मॉ के संरक्षण मे रहती थी।तव ये चार घन्टे कारीन के होते थे.जिनमे वो किसी एक आरखिटेक्ट के

लिए काम करती थी।कुल मिला कर हजार मार्क महीने मे होते थे.जिसे जर्मनी मे ज्यादा नही कहा जा सकता था।यहॉ आधे से ज्यादे पैसे तो मकान के किराये मे ही चला जाता है.फिर भी कारीन अपने और कारो को ढंग से रखे हुए थी।कारीन की विधवा मॉ के पास भी कुछ ज्यादे पेन्शन न था.पर उनके बर्लिन आने के बारे मे मै अक्सर सुनता था।
अक्टूबर के प्रारंभ होते ही बर्लिन का मौसम बेहद गन्दा हो गया।पतझड़.ठंढ.बरसात और आये दिन पन्द्रह सतरह डिग्री तापमान भी।इस देश को यहॉ के मौसमों ने ठीकठाक रूला रखा है।जिधर देखो.उधर ही गन्ध।पेंड़ो से गिरे पत्ते और कीचड़ ही कीचड़।यहॉ की सड़के सिर्फ गाड़ियों के लिए बनाई गई है।वहॉ की सफाईयॉ तो बनी रहती है.पर बाकी रास्तों पगडंडियों का तो बुरा हाल रहता है।
मैने बेके पार्क का कच्चा रास्ता लेना छोड़ दिया और हिन्डेनबुर्गडाम के रास्ते से काम पर आने जाने लगा।
इन पिछले चार महीनो मे मै बेके पार्क मे कारीन के बारे मे जो कुछ भी जान पाया.उसका सारांश जानने के बावजूद मै हल्के हल्के उसकी तरफ बढता जा रहा था।कभीं कभीं मै खुद पर ही दंग हो जाया करता था।
कारीन अपने पति एरदाल से मिलने से पहले एक मनफ्रेड नाम के जर्मन से भी मिल चुकी थी जो स्टेन्डाल मे रहता था।कारीन के अनुसार कारो मनफ्रेड की बेटी थी।जब वो मुझे पहली बार हैर्टी मे मिली थी.उन दिनो वो इन दोनो की सेवा मे लगी हुई थी।सिमेस्टर के दौरान मनफ्रेड की सेवा और सिमेस्टर की छुट्टियों मे एरदाल की सेवा।
ःतुमने एरदाल से तलाक क्यों लिया!
एक साथ उसके माथे पर सैकड़ो बल पड़ गए।इस सवाल का जबाब तो उसके पास था.पर उससे एक शब्द तक न कहा गया।
खैर!मनफ्रेड से तुमने शादी क्यों नही की!
ःजब उसे मेरे गर्भ का पता चला.तो वो दौड़ा अपनी मॉ के ऑचल मे अपना चेहरा छुपा लिया।उसने तो कारो को आज तक देखा तक नही है।
ःतुम्हे ऐसा नही लगता कि जिस कलम से हमारे ईश्वर हमारा भाग्य लिखते है.उसे छूने का तुमने दुस्साहस किया था!
ःपता नही प्रमोद!मुझसे अपने मॉ की चिन्तायें सही नहीं जाती.कहके वो फूट फूट कर रोने लग पड़ीःन तो पढाई कर पाई और न ही मेरा घर ही बस पाया।
उद्धार और त्याग जैसे शब्द मुझे अनुप्राणित तो करते थे.पर मै ये भी जानता था कि ये हमारे भगवानों के शब्दकोश के शब्द हैं।मै ज्यादे से ज्यादे कारीन को बस अपना प्यार दे सकता था।
नवंबर खत्म होने को आया।कारीन और कारो से मिले मुझे दो महीने हो चले थे।काम के बाद मै रोज ही काईसर्स जाता था।पोस्ट का भी चक्कर मार लेता था.पर ये न मिलते थे।मौसम की वजह से वैलेन्सिया बन्द कर दी गई थी।ठंढ मे कौन आईसक्रीम खाता है!एक दिन मेरा मन न माना।मैने अपनी सायकल ओवलिनस्ट्रासे की ओर मोड़ दी।कारीन के ड्राईन्गरूम के खिड़कियों की जालोजियॉ तो गिरी हुई थी.पर उनसे छन कर आता प्रकाश सड़क तक आ रहा था।मै आश्वस्त हुआ।मै डर रहा था कि कहीं वो ब्राउनस्वाईग तो हमेशा के लिए नही चली गई।
मै वाकई कारीन से मन ही मन प्यार करने लगा था.ये बात इस शाम मेरे सामने बिल्कुल स्पष्ट हो चली थी।रह रह कर मेरे ऑखों के सामने उसका चेहरा नाच जाता था।सड़कों पर भी चलते समय वो अपने पग ऐसे रखती थी कि सड़कों को पता ही न चले कि उन पर कोई चल भी रहा है।उसके स्पर्श भी किसी रूई के फाहे की तरह होते थे।बेके पार्क मे मुझे उससे रोज ही ये सुनने को मिलता थाःइतनी दूर क्यों बैठे हो!तुम्हे अन्जान समझ कर अगर कोई हमारे बीच आके बैठ गया तो!अपने अपार्टमेन्ट के दरवाजे पर अकस्मात उसकी नजरें उठ जाती थीःअन्दर नही आना है!मेरे ना करने पर उसके ऑखों मे एक गहरी उदासी तिर जाती थी।उसकी कई बातें मुझे इस शाम को घेरे बैठी थीं।
दिसंबर का महीना शुरू हो गया था।रातों मे प्रायः रोज ही यहॉ का तापमान माईनस मे चला जाया करता था.पर दिन मे फिर प्लस मे आ जाता था।आसमान बादलों से ढॅके होते थे.जिन्हे चिर कर जब तब सूर्य देवता भी अपना दर्शन दे देते थे।
जब तब बरसातें भी हो जाती थी।इस तरह के मनहूस मौसम मे बिना वजह के कौन अपना घर छोड़ता है!मैने कारीन और कारो से मिलना एक संयोग के ही हवाले कर दिया.पर काम के बाद ओवलिनस्ट्रासे की तरफ अपनी सायकल मोड़ना एक तरह से एक नियम ही बन गया था।दो चार मिनट कारीन के ड्राईन्गरूम की बन्द खिड़कियॉ निहार कर मै वापस अपने घर आ जाता था।
आसमान के बादल छॅटने लगे थे।अब किसी भी दिन बर्फबारी हो सकती थी।एक्समस के आने मे अभी भी दो सप्ताह की देरी थी.पर श्लोसस्ट्रासे तो कब का सजाया जा चुका था।हिन्डेनबुर्गडाम की दुकाने भी सज चली थी।जिधर भी नजर जाती थी चाहे वो दुकान हो या मकान .उनकी खिड़कियॉ रंग बिरंगे बल्वों से डेकोरेटेड दिखती थी।श्लोसस्ट्रासे पर की भींड़ बढती जा रही थी।वहॉ की दुकानो से जो भी बाहर आते दिखता था.उसके हॉथों मे दसों थैले होते थे.जो उपहारों से भरे होते थे।
मै भी कारीन के लिए एक ढंग का परफ्यूम और कारो के लिए एक प्लेमोबील का बड़ा सा पानी का जहाज खरीद कर उनसे मिलने की बाट जोह रहा था।
एक्समस मुझे एक वजह से बेहद उदास कर जाता था।इस पर्व को अपने परिवार के संग मनाया जाता है.जो मेरे पास न था।ये एक बेहद ही शान्त पर्व है।इतना शान्त कि ये किसी का एकाकीपन घनघोर कर सकता है।
एक दिन सुबह पूरा बर्लिन सफेद था।रात भर दबा के बर्फबारी होती रही.और मुझे पता तक न चला।अभीं भी बर्फ गिरे जा रहे थे।मै पैदल ही काम पर चल पड़ा।सर के ऊपर एक छाता तान लिया।
काम के बाद मै वापस घर आ रहा था।अभी भी दबाके बर्फबारी हो रही थी।अभीं मै रोशमन तक पहुँचा ही था कि अपने पीठ पीछे लगभग चिल्लाती आवाज मे कई दफे रमोन सुना।मैरे पैर थम गये।जब पलटा.तो देखाःबिना फिसलने और गिरने की परवाह किये कारो दौड़ी चली आ रही है।आते ही वो मेरे गर्दन से झूल गईःकहॉ थे इतने दिन!मुझसे मिलने क्यों नही आये!तुम मामा से क्यों नाराज हो!
तब तक कारीन भी पास आ चुकी थी।तभी मुझे एक बार बड़े आदेशात्मक स्वर मे कारो का ये कहना सुनना पड़ाःरमोन!तुम मेरे लिए एक बड़ा असली एक्समसट्री नही खरीद सकते!मॉ से वो उठाया नही जाता।प्लास्टिक के पौधे मुझे एक दम बेकार लगते हैं।उन्हे तो सजाने का भी मेरा मन नही करता।
कारीन उसे चुप कराना चाहते हुए भी चुप न करवा सकी।
एक्समसट्री को खरीदने या ढोने की समस्या कोई समस्या न थी।मेरी समस्या ये थी कि मै शुरू के दिनो मे अपने सम्बन्ध कारीन से बस इतनी ही

दूरी से चाहता था।फिर भी कारो के लिए मुझे कुछ न कुछ करना ही था

ःकितना बड़ा पौधा तुम्हे चहिये कारो!

ःतुम्हारे जितना बड़ा

कारीन बीच मे कुछ बोलना चाहती थी.पर मैने उसे इशारे से मना कर दिया और उससे पूछाःकल तुम किस वक्त घर पर हो!

ःक्यो!तुम कारो को सर पर चढाते जा रहे हो!

मैने कारो का दाहिना हॉथ थामा और कारीन ने बॉया।हम ओवलिनस्ट्रासे की ओर बढ चले।मैने बॉये हॉथ से अपना छाता तान रखा था।कारो और कारीन अपने सरों पर अपने जैकेटों की टोपियॉ चढा रखे थे।उनके कन्धों पर उनके रूक्जाक्स लटके हुए थे।कारो अपने मिनि क्लब और अपनी सहेलियों के बारे मे बताये जा रही थी।उसका हर वाक्य वाईश डू से शुरू होकर इस्ट एस निक्सट कूल पर खत्म होता था।डोख डोख कहके मै उसे सुने जा रहा था।ओवलीनस्ट्रासे कब आया.मुझे पता तक न चला।अपने झोले से जब मैने किन्डर कन्ट्री चाक्लेट का भरा पैकेट निकाल कर कारो को पकड़ाया तो उसकी ऑखे फटी की फटी रह गई।अब मै कारीन की ओर पलटाःतुम तो ठीकठाक हो न!

इशारे से ही उसने हॉ कहा।

ःएक्समस मे यहीं हो!

ःहॉ।रविवार को मॉ दो सप्ताह के लिए बर्लिन आ रही हैं।

ःतुम दोनो से मिले महीनो हो गए।घर से बाहर निकलती ही नही हो क्या!

ःजरा कम।तुम कैसे हो!

ःमै बिल्कुल ठीक हूॅ।

ःतुम भी एक्समस मनाते हो!

ःनही।

ःक्या करते हो इस शाम को!

ःकुछ खास नही।टी वी पर अगर कोई अच्छी फिल्म आती है.तो उसे देख लेता हूॅ।

ःहमारे पास नही आना चाहते!

ःइस पारिवारिक पर्व मे तुम्हे मेरी कहॉ पर जरूरत है!

ःतुम गैर नही हो।तुम गैर कभी भी नही थे।तुम जरा देर से बर्लिन आये।तब तक मैने अनाप शनाप फैसले ले लिये थे।

दूसरे दिन काम के बाद मै राट हाऊस स्टेगलित्स से लगे अलब्रेख्टस्ट्रासे पर गया.जहॉ एक पुल के नीचे सैकड़ो हजारों एक्समसट्री खड़े या गिरे पड़े थे।इनके मालिक से बात मैने करके एक बड़ा सा ट्री कारीन के यहॉ उसी दिन भिजवा दिया।डेलिवरी के पैसे मुझे अलग से देने पड़े।

मैने कई बार गम्भीरता से सोचा कि कारो और कारीन को अपने मकान मे हमेशा के लिए ही बुला लूॅ।ऐसे भी मेरे पास दो कमरे थे.जो बन्द ही रहते थे.पर अब तक जो कुछ भी मै कारीन के बारे मे जान पाया था.उसे मै बस एक दोस्त के रूप मे पचा सकता था एक पति के रूप मे नही।मेरे इर्द गिर्द का ये संसार.जो गेरानियनस्ट्रासे से लेकर ओवलिनस्ट्रासे तक.हिन्डेनबुर्गडाम से लेकर बेके पार्क तक फैला हुआ था.अपने इसी रूप मे सुन्दर था।मै इस संसार को समेट कर अपने मकान मे लाने से डरता था।

अक्सर मेरी नज़र कारो के बनाये तसवीर पर जा पड़ती थी.जो उसने मुझे एक्समस पर दिया थाःरंग बिरंगे एक्समसट्रीज और सितारों से भरी ये तसवीर मैने अपने पढने लिखने की मेज के सामने लगे पीन बेर्ड पर टॉक रखा थी।अपनी तसवीरों के नीचे छोटे बड़े अच्छरों से उसने अपना नाम भी लिख रखा था।कारीन ने मुझे एक अपना बनाया लेजे सायखन दिया था।

एक्समस के बाद इयर्स इव आया।नये साल का आरम्भ हुआ।कारीन और कारो की याद मुझे घेरे रखी।कैलेन्डर के पन्ने बदलते रहे।बर्फो ने कब बर्लिन को मुक्त किया.कब यहॉ के पेड़ो पर नई पत्तियॉ आई.कब यहॉ का तापमान कान्सटेंट प्लस मे आया.मुझे पता तक न चला।

एक दिन मै बेके पार्क से होते हुए घर वापस आ रहा था।हाईडनस्ट्रासे से लगा स्पील प्लात्स बच्चों.उनके माता पिता.किन्डर वागेन और बग्गियों से खचाखच भरा पड़ा था।मुझे दूर से ही कारीन एक बैंच पर बैठी कुछ पढती दिखी।कारो को भी मैने कई महीनो से न देखा था।मैने अपनी सायकल की रफ्तार तेज की।स्पील प्लात्स पर जब मैने कारीन को हलो कहा तो वो हल्के से हलो कहके थोड़ा सरक कर मेरे लिए बैठने के लिए जगह बना दी और अपनी किताब के पन्नो पर अपनी नजरें गड़ाये रखी।

उसके रवैये पर एक बार मुझे चौंकना पड़ा।हतप्र्भ मैने उससे पूछाःतुम्हारी तबीयत तो ठीक है!कारो कहॉ है!

अपनी एक कॉपती उॅगली कारीन ने एक दिशा मे उठा दी।कारो किसी एक आदमी के संग पूरी तन्मयता से बालूओं की पेस्ट्रियॉ बना बना कर सजाये जा रही थी।उन्हे सजाने से पहले वो इन्हे इस आदमी को चखने को देती थी।पता नही वो उससे क्या कहता था कि वो हॅस हॅस कर लोट पोट हो जाती थी।वो आदमी भी आराम से बिना अपने कपड़ों की परवाह किए बालू पर पालथी मारे बैठा था।

मैने कारीन की ओर देखा।वो अपने दोनो हॉथ अपने घुटनो मे दबाये अपनी नजरें नीचे किये बैठी थी।एक अस्फूट स्वर मै इतना ही सुनाःमनफ्र्ेड

मेरी ऑखो के सामने ॲधेरा छा गया।

ःवो अब हमेशा हमारे संग ही रहेगा।वो हमेशा के लिए बर्लिन आ गया है।

ये विदाई मेरे जीवन की कठोर विदाईयों मे से एक है।कम से कम चलने से पहले मनफ्रेड ने मुझे अपना हॉथ देते हुए इतना तो कहा ही थाःआलेस गुटे प्र्मोद।कारीन अपनी नजरें बचाती छुपाती रही और कारो तो अपने पिता के प्यार मे इतनी खो चली थी कि उसने ढंग से मुझे देखा तक नही।आखिर अपना खून अपना ही होता है।

मनफ्रेड कारो को अपने कन्धों पर बिठाये चल पड़ा।अपने दोनो हॉथों से वो कारो के दोनो पैर पकड़े था।कारीन अपने दाहिने हॉथ की परिधि मे मनफ्रेड की कमर कसे चली जा रही थी।मै असहाय खड़ा उन्हे जाते देखता रहा।

इनमे से किसी ने एक बार भूल से भी पलट कर पीछे की ओर न देखा...

प्र्मोद कुमार सिंह

Schütze